दक्षिण पूर्व रेलवे, खड़गपुर कारखाना

खड़गपुर कारखाना

दर्पण

संरक्षक

सीताराम सिंकू
मुख्य कार्य प्रबंधक

प्रधान संपादक

संजय त्यागी
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
उप मुख्य यांत्रिक
इंजीनियर(कारखाना)

संपादक

तारकेश्वर शर्मा

सहायक संपादक

वेद प्रकाश मिश्र

तकनीकी संपादक

उदय कुमार मिश्र
सीनियर इंजीनियर(आई. टी.)

पत्राचार हेतु पता

संपादक
खड़गपुर कारखाना दर्पण
राजभाषा अनुभाग,
मुख्य कार्य प्रबंधक कार्यालय,
खड़गपुर कारखाना
पोस्ट : खड़गपुर-721301

महाप्रबंधक का निरीक्षण

महाप्रबंधक श्री राधेश्याम ने 22.11.2015 को कारखाना का निरीक्षण किया। आवधिक मरम्मत के बाद डिब्बों की विश्वसनीयता में वृद्धि हुई है इस बात को उन्होंने रेखांकित किया। विद्युत इंजनों पर ध्यान देने की जरूरत है। मुख्य कार्य प्रबंधक श्री सीताराम सिंकु ने कारखाना की उपलब्धियों के बारे में महाप्रबंधक महोदय को बताया। कारखाना ने एस एल आर के 224 डिब्बों का सफलता पूर्वक मरम्मत कर के निकाला। पिछले वर्ष के 86 एस एल आर की तुलना में यह अच्छा प्रदर्शन है।

मु.का.प्र /माडिका श्री वाय.बी.सहारे ने सी.टी.आर.बी के बारे में विस्तार से महाप्रबंधक महोदय को बताया।

इस दौरान सेरसा में आयोजित फुटबाल मैच का भी उन्होंने आनंद लिया। 17.11.2015 से 22.11.2015 तक आयोजित अखिल भारतीय अन्तर रेलवे फुटबाल चैम्पियनशिप के फाइनल मैच के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया।

माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी डीजल रेल कारखाना (डी.एल.डब्ल्यू.), वाराणसी में आगंतुक पुस्तिका में अपने बचपन की यादों का स्मरण करते हुए।

बचपन से ही मेरा नाता रेलवे से रहा,
रेलवे स्टेशन से रहा।
रेल के डिब्बे से रहा,
रेल के यात्रियों से रहा।

कल से मैं यहीं
डी.एल.डब्ल्यू. के परिसर में ठहरा हूँ।
चारों तरफ रेलवे के माहौल ने
मुझे मेरे बचपन से जोड़ दिया है।

शायद पहली बार, पूरा समय बचपन के
वो रेल के डिब्बे, वे यात्री सब कुछ
मेरी आँखों के सामने जिंदा हो गये।
वे यादें बहुत ही भावुक थीं।

यहाँ सबका अपनापन बहुत भाया।
सभी कर्मयोगी भाईयों को धन्यवाद !

अब तो मुझे बार-बार यहाँ आना होगा,
फिर बचपन की स्मृतियों के साथ
नए संकल्प-संभावनाएं बनेंगी।

माँ गंगा का प्यार और आशीर्वाद
हमारे देश को निर्मल बनाए,
हमारी सोच को निर्मल बनाए,
यही प्रार्थना।

- **श्री नरेन्द्र मोदी**

(08 नवम्बर, 2014)

तारकेश्वर शर्मा 'विकास' की कविताएँ

कविता मोहब्बत है या मोहब्बत कविता

मेरी राय है कि लिखी जाएँ
प्रेम पर अधिक से अधिक कविताएँ
किए जाएँ पुराने मुहावरे/लोकोक्तियाँ
फिर से चरितार्थ ताकि
कविताओं की हर पंक्ति को
एक अदना पाठक भी
कर ले कंठस्थ।
जानते हैं –
'मन चंगा तो कठौती में गंगा' को
वही आत्मसात कर सकता है
जो होगा मोहब्बत के मज़हब का देवता
और होगी जिसमें
विश्व-बंधुत्व की प्रबल प्रेम-भावना !
दोस्तो ! अगर कविता को
हम मोहब्बत मान लें
तो एक कवि का धर्म होगा
पवित्र-प्रेम के पौध को
खाद-पानी डाल बड़ा करना
और पर्यावरण को संतुलित रखना।
प्रेम को कइयों ने पढ़ा, चखा, ... और
बाबा कबीर की तरह 'ढाई आखर' के प्रेम को
ताउम्र गुना और किया प्रेम को
ऐसे परिभाषित कि
कहीं तात्याना ग्राउज, ईना क्यूबिश, जूलिया
ब्लूसोविच, ...
और तस्लीमा नसरीन जैसी अनेकों कवित्रियाँ
हुईं।
प्रश्न उठता है –
कौन होगा प्रेम की कविता का किट्स ?
कौन होगा मोहब्बत का देवता ?
जो देवों का देव था, नहीं रहा
उसकी जरूरत भी नहीं थी
देवों का देव इंद्र किसे चाहिए था
उन्हें जिन्हें कविता को
लस्टम-पस्टम बनाना था
या कुछ और !
दोस्तो ! हमें चाहिए पंत, बच्चन, निराला-सा
कवि
सुभद्रा, महादेवी, अमृता-सी कवयित्री !

*****

वक्त-बेवक्त अकाल में

हे प्रभो ! मैं चाहता हूँ –
न हटूँ, न थकूँ और न ही हार मानूँ
बस साहित्य-सृजन में लगा-भिड़ा रहूँ
हाँ, जब लगे कि थक गया हूँ
तो थोड़ा विश्राम कर लूँ
ताकि नई ताज़गी के साथ
फिर लग जाऊँ चंद-प्रेम व प्रेमचंद को पढ़ने में
अपने भीतर बसे कबीर, सूर और सुलसी को
जगाने में, चमकाने में
कर दूँ दिन-रात एक
और लिखता रहूँ, बोलता रहूँ
उगाता रहूँ, सिंचाई करता रहूँ
जैसे करते रहे हैं
मेरे किसान काका – तारक काका।
जानते हैं –
कितने दिनों से करता रहा हूँ जुताई
ढेला पिट-पाटकर करता रहा हूँ

मिट्टी को भुरभुरा
घास-पात से मुक्त।
तदुपरांत, नम मिट्टी में डालता हूँ बीज
ताकि ऊपजें गेहूँ, सरसों, चना,..... और
वैसी फसलें जिनसे भर सकें
आम जन के पेट।
हे प्रभो ! मैं करता रहूँ
सच्चे मन से
लगन-विश्वास के साथ विचारों की खेती
ताकि खूब लहलहाएँ विचारों के पौध
सिर्फ गोबर और कंपोस्ट के बल।
.... और उपजें मनों-मन, टनों-टन
विचार ! विचार ! ! विचार ! ! !
क्षुधातृप्ति में वक्त-बेवक्त अकाल में !
हाल-फिलहाल खुशहाल में ! !

*****

तिरपन की उम्र में

जब बच्चा था
तो भाता था
छुपन-छुपाई का खेल
और हुआ जब
पाँच-सात बरस का
तो उड़ाने लगा
आकाश में
हरे-लाल-पीले,
बैंगनी-चंपई-नीले
किसिम-किसिम के पतंग।
तैराने लगा –
दुआर के बुहारन पर
काग़ज की नावें।
चटकाने लगा –
कच्चे बेल के फल से
अरुणवा, बिजयी भैया, ... और
जगदीस चाचू के विकेट।
हाँ, हुआ जब और कुछ बड़ा
यानी तेरह-चौदह की उम्र का
तो अपने बाबूजी की तरह
गणित के हर कठिन सवाल को
करने लगा मिनटों में हल।
चाहे वे हों -
अलजेब्रा के फैक्टर, इक्वेशन, ...
या ट्राइग्नोमेट्री के कोई भी प्रश्न।
... और रही बात अंकगणित की
तो उस समय लगता ही नहीं था
कि अंकगणित भी होता है कोई विषय ?
मैं तो मन ही मन
पढ़ लिया करता था पहाड़ा
कर लिया करता था
जोड़, घटाव, गुणा और भाग।
अक्सर कुछ घटा लिया, कुछ बढ़ा दिया,
कुछ में गुणा किया, कुछ का वर्ग किया
और झटपट बता दिया प्रश्नों के उत्तर।
लेकिन आज तिरपन की उम्र में
हल नहीं होते
ग़ज़ल के चंद शेर
गीतों के मुखरे।
कारण –
कहाँ से लाऊँ
गालिब, फैज, फिराक के फ़न
जयशंकर, निराला, महादेवी के दिलोदिमाग।

*****

गाँधी जयन्ती और स्वच्छता अभियान

दिनांक 2 अक्टूबर 2014 को खड़गपुर कारखाना के सभी विभागों ,सारी कर्मशालाओं में स्वचछता अभियान चलाया गया। प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत की संकल्पना और रेलमंत्री के निर्देशों के अनुपालन के क्रम गाँधी जी को याद करते हुए आज कारखाने के सभी वरिष्ठ व कनिष्ठ अधिकारियों के साथ रेलकर्मियों ने स्वच्छता के इस अभियान में श्रमदान किया।

गाँधी जी व्यक्तिगत जीवन में तथा सामाजिक जीवन में स्वच्छता के प्रति विशेष आग्रही थे।

श्री सीताराम सिंकु ,मुख्य कार्य प्रबंधक ,ने इस अवसर पर कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया और विभिन्न कार्यालयों का निरीक्षण किया। आपने कहा कि स्वच्छता का पहला अक्षर 'स्व' है और इसका अर्थ हमें खुद अपने कार्य स्थल और परिवेश की सफाई का ध्यान रखना चाहिए।

कारखाना के सभी अधिकारी यथा श्री संजय त्यागी, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी व उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (उत्पादन), श्री अमित सिन्हा, उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (सवारी डिब्बा) ने मुख्य कार्य प्रबंधक के साथ स्वच्छता अभियान के श्रमदान एवं निरीक्षण में अपना सहयोग दिया।

खड़गपुर कारखाना में हिन्दी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन

24 दिसम्बर 2014 को खड़गपुर कारखाना के सवारी डिब्बा कर्मशाला में श्री संजय त्यागी, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर(सवारी डिब्बा) की अध्यक्षता में उनके सभाकक्ष में राजभाषा अनुभाग के सौजन्य से सवारी "**डिब्बों के आफ पीओएच की गुणवत्ता और ग्राहक संतुष्टि**" विषय पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस संगोष्ठी में लगभग 30 कर्मचारियों के साथ सवारी डिब्बा विभाग के सभी अधिकारी उपस्थित थे।

संरक्षा पर कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु

असंरक्षित काम के कारण-

असंरक्षित तरीके से काम करने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं-

1. जानकारीज्ञान और कौशल का अभाव/
2. मनोवैज्ञानिक कारण (नशे की हालत ,घमंडी स्वभाव ,अति आत्मविश्वास)
3. शारीरिक कारण

दुर्घटना रोकने हेतु उपाय -:

1. प्रबंधन नीति
2. संरक्षा संगठन की संरचना
3. संरक्षानिरीक्षण -
4. दुर्घटना की रिपोर्ट
5. दुर्घटना की जाँच
6. दुर्घटना का रिकार्ड रखना
7. दुर्घटना सांख्यिकी का विश्लेषण
8. संयंत्रों के रखरखाव का प्रभावी कार्यक्रम
9. दायित्व और उत्तरदायित्व का निर्धारण
10. खतरों और संकट की पहचान
11. कार्यस्थल के उपस्कर और काम के तरीकों में संरक्षा बनाए रखना।

प्रबंध-नियंत्रण :-

निम्नलिखित तरीकों से दुर्घटना रोक सकते हैं -:

1. दुर्घटना के कारण की खोज
2. असंरक्षित हालातों को खत्म करना
3. असंरक्षित काम को खत्म करना

दुर्घटना के कारणों की तलाश :

निम्नलिखित तरीकों से दुर्घटना कारणों का पता लगा सकते हैं।-

1. कार्य–विश्लेषण-संरक्षा-किसी काम के प्रत्येक चरण में आने वाले संकटों की पहचान करते हुए काम का विश्लेषण
2. दुर्घटना की जांच
3. संयंत्र एवं उपस्करों की जांच
4. दुर्घटना आंकड़ों का रिकार्ड रखना और टेबुलेशन (सारणीकरण)
5. आंकड़ों का विश्लेषण

असंरक्षित परिस्थितियों का खात्मा -:

असंरक्षित हालात इन तरीकों से हटाए जा सकते हैं -

1. कार्यस्थल, सभी मशीनों, उपस्करों की सुरक्षा
2. व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण जो आवश्यक हैं ,उनकी उपलब्धता
3. संरक्षित एवं सुयोग्य डिजाइन और निर्माण
4. पर्याप्त एवं सुयोग्य वायुछिद्र
5. दोषपूर्ण स्थितियों को सुधारना
6. पर्याप्त एवं सुयोग्य प्रकाश व्यवस्था
7. काम करने के संरक्षित प्रबंध प्रक्रिया एवं प्रणाली

असंरक्षित कार्य को खत्म करना :-

असंरक्षित काम निम्न तरीके से खत्म कर सकते हैं -

1. संरक्षा के बारे में शिक्षा एवं प्रशिक्षण
2. पर्यावरण-देखभाल निगरानी
3. अनुशासन
4. प्रेरणा

*****